Chapter छह

दक्ष की कन्याओं का वंश

इस अध्याय में बताया गया है कि प्रजापति दक्ष की पत्नी असिक्नी के गर्भ से साठ पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं। जनसंख्या बढ़ाने के उद्देश्य से वे विभिन्न पुरुषों को दान दे दी गईं। नारद मुनि ने दक्ष की इन सन्तानों को स्त्री जाति होने के कारण वैराग्य-जीवन निर्वाह करने का उपदेश नहीं दिया। इस प्रकार इन पुत्रियों को नारदमुनि से बचा लिया गया। इन पुत्रियों में से दस धर्मराज के साथ ब्याह दी गईं, तेरह कश्यप मुनि को और सत्ताईस चन्द्रदेव को दे दी गईं। इस प्रकार पचास पुत्रियाँ बाँट दी गई। शेष दस पुत्रियों में से चार कश्यप को और दो-दो भूत, अंगिरा तथा कृशाश्व को प्रदान की गईं। यहाँ यह समझ लेना चाहिए कि विभिन्न महापुरुषों के साथ इन साठों कन्याओं के संयोग से ही यह समस्त ब्रह्माण्ड विभिन्न प्रकार की जीवात्माओं से परिपूर्ण हो सका, जिसमें मनुष्य, देवता, असुर, पशु, पक्षी तथा नाग सम्मिलित हैं।

श्रीशुक उवाच

ततः प्राचेतसोऽसिक्न्यामनुनीतः स्वयम्भुवा ।
षष्टिं सञ्जनयामास दुहितॄः पितृवत्सलाः ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—श्रीशुकदेव गोस्वामी ने कहा; ततः—इस घटना के बाद; प्राचेतसः—दक्ष; असिक्न्याम्—असिक्नी नामक पत्नी से; अनुनीतः—शान्त किये गये; स्वयम्भुवा—श्रीब्रह्मा के द्वारा; षष्टिम्—साठ; सञ्जनयाम् आस—उत्पन्न किया; दुहितृः—कन्याएँ; पितृ-वत्सलाः—अपने पिता की परम प्यारी।

श्रीशुकदेव गोस्वामी ने कहा, हे राजन्! तदनन्तर ब्रह्माजी की प्रार्थना पर प्रजापति दक्ष ने, जिन्हें प्राचेतस कहा जाता है, अपनी पत्नी असिक्नी के गर्भ से साठ कन्याएँ उत्पन्न कीं। सभी कन्याएँ अपने पिता को अत्यधिक स्नेह करती थीं।

तात्पर्य : अपने अनेक पुत्रों की हानि की घटनाओं के बाद दक्ष को नारद मुनि के प्रति की गई अज्ञता पर पश्चात्ताप हुआ। तब श्री ब्रह्मा दक्ष के पास गये और उनको फिर सन्तान उत्पन्न करने की सलाह दी। इस बार दक्ष सावधान थे, अतः उन्होंने पुत्रों के बजाय कन्याएँ ही उत्पन्न कीं जिससे नारद उन्हें संन्यास स्वीकार करने पर विवश करके विरक्त न बना सकें। स्त्रियों के लिए वैराग्य नहीं बना है, उन्हें तो अपने अच्छे पतियों की आज्ञा का पालन करना चाहिए, क्योंकि यदि पति मुक्ति का पात्र है, तो उसकी पत्नी को स्वयमेव मुक्ति प्राप्त हो जाती है। जैसा कि शास्त्रों का कथन है, पत्नी अपने पति के पवित्र कार्यों में हिस्सा बँटाने वाली होती है। अतः स्त्री को चाहिए कि वह अपने पति की पतिव्रता और आज्ञाकारिणी बने। तभी बिना किसी भिन्न प्रयास के वह अपने पति के लाभ में हिस्सा बँटा सकती है।

दश धर्माय कायादाद्दि्वषट्त्रिणव चेन्दवे ।
भूताङ्गिरःकृशाश्वेभ्यो द्वे द्वे तार्क्ष्याय चापराः ॥ २ ॥

शब्दार्थ

दश—दस; धर्माय—राजा धर्म अर्थात् यमराज को; काय—कश्यप को; अदात्—दे दिया; द्वि-षट्—छह की दूनी तथा एक (तेरह); त्रि-नव—नौ का तिगुना (सत्ताईस); च—भी; इन्दवे—चन्द्रदेव को; भूत-अङ्गिरः-कृशाश्वेभ्यः—भूत, अंगिरा तथा कृशाश्व को; द्वे द्वे—दो दो; तार्क्ष्याय—पुनः कश्यप को; च—तथा; अपराः—शेष।

उन्होंने धर्मराज (यमराज) को दस, कश्यप को तेरह, चन्द्रमा को सत्ताईस तथा अंगिरा, कृशाश्व एवं भूत को दो-दो कन्याएँ दान स्वरूप दे दीं। शेष चार कन्याएँ कश्यप को दे दी गईं (इस प्रकार कश्यप को कुल सत्रह कन्याएँ प्राप्त हुईं)।

नामधेयान्यमूषां त्वं सापत्यानां च मे शृणु ।
यासां प्रसूतिप्रसवैर्लोका आपूरितास्त्रयः ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

नामधेयानि—विभिन्न नाम; अमूषाम्—उनको; त्वम्—तुम; स-अपत्यानाम्—अपनी संतानों सहित; च—तथा; मे—मुझसे; शृणु—कृपया सुनिये; यासाम्—उन सबों के; प्रसूति-प्रसवैः—अनेक सन्तानों तथा वंशजों के द्वारा; लोकाः—समस्त लोक; आपूरिताः—बसे हुए हैं; त्रयः—तीन (ऊपरी, बीच के तथा निम्न लोक)।

अब मुझसे इन समस्त कन्याओं तथा उनके वंशजों के नाम सुनो, जिनसे ये तीनों लोक पूरित हैं।

भानुर्लम्बा ककुद्यामिर्विश्वा साध्या मरुत्वती ।
वसुर्मुहूर्ता सङ्कल्पा धर्मपत्न्यः सुताञ्शृणु ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

भानुः—भानु; लम्बा—लम्बा; ककुत्—ककुद; यामिः—यामि; विश्वा—विश्वा; साध्या—साध्या; मरुत्वती—मरुत्वती; वसुः—वसु; मुहूर्ता—मुहूर्ता; सङ्कल्पा—संकल्पा; धर्म-पत्न्यः—यमराज की पत्नियाँ; सुतान्—उनके पुत्र; शृणु—सुनो।

यमराज को प्रदत्त दस कन्याओं के नाम थे भानु, लम्बा, ककुद, यामि, विश्वा, साध्या, मरुत्वती, वसु, मुहूर्ता तथा संकल्पा। अब उनके पुत्रों के नाम सुनो।

भानोस्तु देवऋषभ इन्द्रसेनस्ततो नृप ।
विद्योत आसील्लम्बायास्ततश्च स्तनयित्नवः ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

भानोः—भानु के गर्भ से; तु—निस्सन्देह; देव-ऋषभः—देव-ऋषभ; इन्द्रसेनः—इन्द्रसेन; ततः—उस (देवऋषभ) से; नृप—हे राजन्; विद्योतः—विद्योत; आसीत्—उत्पन्न हुआ; लम्बायाः—लम्बा के गर्भ से; ततः—उससे; च—तथा; स्तनयित्नवः—समस्त बादल।

हे राजन्! भानु के गर्भ से देव-ऋषभ नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके इन्द्रसेन नाम का एक पुत्र हुआ। लम्बा के गर्भ से विद्योत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसने समस्त बादलों को जन्म दिया।

ककुदः सङ्कटस्तस्य कीकटस्तनयो यतः ।

भुवो दुर्गाणि यामेयः स्वर्गो नन्दिस्ततोऽभवत् ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

ककुदः—ककुद के गर्भ से; सङ्कटः—संकट; तस्य—उसके; कीकटः—कीकट; तनयः—पुत्र; यतः—जिससे; भुवः—पृथ्वी के; दुर्गाणि—अनेक देवता, इस ब्रह्माण्ड के रक्षक (जिनका नाम दुर्गा है); यामेयः—यमी के; स्वर्गः—स्वर्ग; नन्दिः—नन्दि; ततः—उस (स्वर्ग) से; अभवत्—उत्पन्न हुआ।

ककुद के गर्भ से संकट नाम का पुत्र हुआ जिसके पुत्र का नाम कीकट था। कीकट से दुर्गा नामक देवतागण हुए। यामी के पुत्र का नाम स्वर्ग था जिससे नन्दि नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ।

विश्वेदेवास्तु विश्वाया अप्रजांस्तान्प्रचक्षते ।
साध्योगणश्च साध्याया अर्थसिद्धिस्तु तत्सुतः ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

विश्वे-देवाः—विश्वदेव नाम के देवता; तु—लेकिन; विश्वायाः—विश्वा से; अप्रजान्—पुत्ररहित; तान्—उनको; प्रचक्षते—कहा जाता है; साध्यः-गणः—साध्य नाम के देवतागण; च—तथा; साध्यायाः—साध्या के गर्भ से; अर्थसिद्धिः—अर्थ सिद्धि; तु—लेकिन; तत्-सुतः—साध्यों का पुत्र।

विश्वा के पुत्र विश्वदेव हुए, जिनके कोई सन्तान नहीं थी। साध्या के गर्भ से साध्यगण हुए जिनके पुत्र का नाम अर्थसिद्धि था।

मरुत्वांश्च जयन्तश्च मरुत्वत्या बभूवतुः ।
जयन्तो वासुदेवांश उपेन्द्र इति यं विदुः ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

मरुत्वान्—मरुत्वान; च—भी; जयन्तः—जयन्त; च—तथा; मरुत्वत्याः—मरुत्वती से; बभूवतुः—जन्म लिया; जयन्तः—जयन्त; वासुदेव-अंशः—वासुदेव के अंश स्वरूप; उपेन्द्रः—उपेन्द्र; इति—इस प्रकार; यम्—जिसको; विदुः—जानते हैं।

मरुत्वती के गर्भ से मरुत्वान तथा जयन्त नामक दो पुत्रों ने जन्म लिया। जयन्त भगवान् वासुदेव के अंश हैं और उपेन्द्र कहे जाते हैं।

मौहूर्तिका देवगणा मुहूर्तायाश्च जज्ञिरे ।
ये वै फलं प्रयच्छन्ति भूतानां स्वस्वकालजम् ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

मौहूर्तिकाः—मौहूर्तिक गण; देव-गणाः—देवता; मुहूर्तायाः—मुहूर्ता के गर्भ से; च—तथा; जज्ञिरे—जन्म ग्रहण किया; ये—जिन सबों ने; वै—निस्सन्देह; फलम्—फल, परिणाम; प्रयच्छन्ति—प्रदान करते हैं; भूतानाम्—समस्त जीवात्माओं का; स्व-स्व—अपना-अपना; काल-जम्—काल से उत्पन्न।

मुहूर्ता के गर्भ से मौहूर्तिकगण नामक देवताओं ने जन्म ग्रहण किया। ये देवता अपने-अपने कालों में जीवात्माओं को उनके कर्मों का फल प्रदान करने वाले हैं।

सङ्कल्पायास्तु सङ्कल्पः कामः सङ्कल्पजः स्मृतः ।
वसवोऽष्टौ वसोः पुत्रास्तेषां नामानि मे शृणु ॥ १० ॥
द्रोणः प्राणो ध्रुवोऽर्कोऽग्निर्दोषो वास्तुर्विभावसुः ।
द्रोणस्याभिमतेः पत्न्या हर्षशोकभयादयः ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

सङ्कल्पायाः—संकल्पा के गर्भ से; तु—लेकिन; सङ्कल्पः—संकल्प; कामः—काम; सङ्कल्प-जः—संकल्प का पुत्र; स्मृतः—विख्यात; वसवः अष्टौ—आठों वसु; वसोः—वसु के; पुत्राः—पुत्र; तेषाम्—उनके; नामानि—नाम; मे—मुझसे; शृणु—सुनो; द्रोणः—द्रोण; प्राणः—प्राण; ध्रुवः—ध्रुव; अर्कः—अर्क; अग्निः—अग्नि; दोषः—दोष; वास्तुः—वास्तु; विभावसुः—विभावसु; द्रोणस्य—द्रोण के; अभिमतेः—अभिमति से; पत्न्याः—पत्नी; हर्ष-शोक-भय-आदयः—हर्ष, शोक, भय आदि नाम वाले पुत्र।

संकल्पा का पुत्र संकल्प कहलाया जिससे काम की उत्पत्ति हुई। वसु के पुत्र अष्ट वसु कहलाये। उनके नाम सुनो—द्रोण, प्राण, ध्रुव, अर्क, अग्नि, दोष, वास्तु तथा विभावसु। द्रोण नामक वसु की पत्नी अभिमति से हर्ष, शोक, भय इत्यादि पुत्रों का जन्म हुआ।

प्राणस्योर्जस्वती भार्या सह आयुः पुरोजवः ।
ध्रुवस्य भार्या धरणिरसूत विविधाः पुरः ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

प्राणस्य—प्राण की; ऊर्जस्वती—ऊर्जस्वती; भार्या—पत्नी; सहः—सह; आयुः—आयुस्; पुरोजवः—पुरोजव; ध्रुवस्य—ध्रुव की; भार्या—पत्नी; धरणिः—धरणि; असूत—उत्पन्न किया; विविधाः—अनेक; पुरः—नगर।

प्राण की पत्नी ऊर्जस्वती के गर्भ से सह, आयुस तथा पुरोजव नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए। ध्रुव की पत्नी का नाम धरणी था जिसके गर्भ से विभिन्न नगरों की उत्पत्ति हुई।

अर्कस्य वासना भार्या पुत्रास्तर्षादयः स्मृताः ।
अग्नेर्भार्या वसोर्धारा पुत्रा द्रविणकादयः ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

अर्कस्य—अर्क की; वासना—वासना; भार्या—पत्नी; पुत्राः—कई पुत्र; तर्ष-आदयः—तर्ष इत्यादि; स्मृताः—विख्यात; अग्नेः—अग्नि की; भार्या—पत्नी; वसोः—वसु की; धारा—धारा; पुत्राः—पुत्र; द्रविणक-आदयः—द्रविणक इत्यादि।

अर्क की पत्नी वासना के गर्भ से कई पुत्र उत्पन्न हुए जिनमें तर्ष प्रमुख था। अग्नि नामक वसु की पत्नी धारा से द्रविणक इत्यादि कई पुत्र उत्पन्न हुए।

स्कन्दश्च कृत्तिकापुत्रो ये विशाखादयस्ततः ।
दोषस्य शर्वरीपुत्रः शिशुमारो हरेः कला ॥ १४॥

शब्दार्थ

स्कन्दः—स्कन्द; च—भी; कृत्तिका-पुत्रः—कृत्तिका का पुत्र; ये—जो; विशाख-आदयः—विशाख इत्यादि; ततः—उस (स्कन्द) से; दोषस्य—दोष का; शर्वरी-पुत्रः—उसकी पत्नी शर्वरी का पुत्र; शिशुमारः—शिशुमार; हरेः कला—भगवान् का अंश।

अग्नि की दूसरी पत्नी कृत्तिका से स्कन्द (कार्तिकेय) नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ जिसके पुत्रों में विशाख प्रमुख था। दोष नामक वसु की पत्नी शर्वरी से शिशुमार नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ जो श्रीभगवान् का अंश था।

वास्तोराङ्गिरसीपुत्रो विश्वकर्माकृतीपतिः ।
ततो मनुश्चाक्षुषोऽभूद्विश्वे साध्या मनोः सुताः ॥ १५॥

शब्दार्थ

वास्तोः—वास्तु; आङ्गिरसी—आंगिरसी नामक पत्नी से; पुत्रः—पुत्र; विश्वकर्मा—विश्वकर्मा; आकृती-पतिः—आकृती का पति; ततः—उससे; मनुः चाक्षुषः—मनु जिनका नाम चाक्षुष है; अभूत्—उत्पन्न हुआ; विश्वे—विश्वदेवगण; साध्याः—साध्यगण; मनोः—मनु के; सुताः—पुत्र।

वास्तु नामक वसु की पत्नी आंगिरसी से महान् शिल्पी विश्वकर्मा का जन्म हुआ। विश्वकर्मा आकृती के पति बने जिनसे चाक्षुष मनु ने जन्म ग्रहण किया। मनु के पुत्र विश्वदेव तथा साध्यगण कहलाये।

विभावसोरसूतोषा व्युष्टं रोचिषमातपम् ।
पञ्चयामोऽथ भूतानि येन जाग्रति कर्मसु ॥ १६॥

शब्दार्थ

विभावसोः—विभावसु के; असूत—उत्पन्न हुए; ऊषा—उषा; व्युष्टम्—व्युष्ट; रोचिषम्—रोचिष; आतपम्—आतप; पञ्चयामः—पंचयाम; अथ—तत्पश्चात्; भूतानि—जीवात्माएँ; येन—जिसके द्वारा; जाग्रति—जाग्रित होते हैं; कर्मसु—भौतिक कार्यों में।

विभावसु की पत्नी ऊषा के तीन पुत्र उत्पन्न हुए—व्युष्ट, रोचिष तथा आतप। इनमें से आतप के पञ्चयाम (दिन) उत्पन्न हुआ जो समस्त जीवात्माओं को भौतिक कार्यों के लिए प्रेरित करता है।

सरूपासूत भूतस्य भार्या रुद्रांश्च कोटिशः ।
रैवतोऽजो भवो भीमो वाम उग्रो वृषाकपिः ॥ १७॥
अजैकपादहिर्ब्रध्नो बहुरूपो महानिति ।
रुद्रस्य पार्षदाश्चान्ये घोराः प्रेतविनायकाः ॥ १८॥

शब्दार्थ

सरूपा—सरूपा ने; असूत—उत्पन्न किया; भूतस्य—भूत की; भार्या—पत्नी; रुद्रान्—रुद्रों को; च—तथा; कोटिशः—एक करोड़; रैवतः—रैवत; अजः—अज; भवः—भव; भीमः—भीम; वामः—वाम; उग्रः—उग्र; वृषाकपिः—वृषाकपि; अजैकपात्—अजैकपात्; अहिर्ब्रध्नः—अहिर्ब्रध्न; बहुरूपः—बहुरूप; महान्—महान्; इति—इस प्रकार; रुद्रस्य—इन रुद्रों के; पार्षदाः—उनके पार्षद; च—तथा; अन्ये—अन्य; घोराः—अत्यन्त भयानक; प्रेत—भूत; विनायकाः—तथा विनायक।

भूत की पत्नी सरूपा ने एक करोड़ रुद्रों को जन्म दिया, जिनमें से प्रमुख ग्यारह रुद्र ये हैं—रैवत, अज, भव, भीम, वाम, उग्र, वृषाकपि, अजैकपात्, अहिर्ब्रध्न, बहुरूप तथा महान्। भूत की दूसरी पत्नी भूता से उनके साथी भयंकर भूतों तथा विनायकादि का जन्म हुआ।

तात्पर्य : श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती की टीका है कि भूत के दो पत्नियाँ थीं। इनमें से पहली पत्नी सरूपा ने ग्यारह रुद्रों को जन्म दिया और दूसरी पत्नी से रुद्र के पार्षदगण उत्पन्न हुए, जिन्हें भूत तथा विनायक कहा जाता है।

प्रजापतेरङ्गिरसः स्वधा पत्नी पितॄनथ ।
अथर्वाङ्गिरसं वेदं पुत्रत्वे चाकरोत्सती ॥ १९॥

शब्दार्थ

प्रजापतेः अङ्गिरसः—अंगिरा नामक अन्य प्रजापति को; स्वधा—स्वधा; पत्नी—पत्नी; पितॄन्—पितरगण; अथ—तत्पश्चात्; अथर्व-आङ्गिरसम्—अथर्वांगिरस; वेदम्—साक्षात् वेद; पुत्रत्वे—पुत्र के रूप में; च—तथा; अकरोत्—स्वीकार किया; सती—सती ने।

प्रजापति अंगिरा के दो पत्नियाँ थीं—स्वधा तथा सती। स्वधा ने समस्त पितरों को पुत्र रूप में स्वीकार किया और सती ने अथर्वांगिरस वेद को ही पुत्र रूप में स्वीकार कर लिया।

कृशाश्वोऽर्चिषि भार्यायां धूमकेतुमजीजनत् ।
धिषणायां वेदशिरो देवलं वयुनं मनुम् ॥ २० ॥

शब्दार्थ

कृशाश्वः—कृशाश्व; अर्चिषि—अर्चिस; भार्यायाम्—अपनी पत्नी से; धूमकेतुम्—धूमकेतु को; अजीजनत्—जन्म दिया; धिषणायाम्—धिषणा नामक पत्नी से; वेदशिरः—वेदशिरा; देवलम्—देवल; वयुनम्—वयुन; मनुम्—मनु।

कृश्वाश्व के अर्चिस् तथा धिषणा नामक दो पत्नियाँ थीं। अर्चिस् से धूमकेतु और धिषणा से वेदशिरा, देवल, वयुन तथा मनु नामक चार पुत्र उत्पन्न हुए।

ताक्ष्र्यस्य विनता कद्रूः पतङ्गी यामिनीति च ।
पतङ्ग्यसूत पतगान्यामिनी शलभानथ ॥ २१ ॥
सुपर्णासूत गरुडं साक्षाद्यज्ञेशवाहनम् ।
सूर्यसूतमनूरुं च कद्रूर्नागाननेकशः ॥ २२ ॥

शब्दार्थ

ताक्ष्र्यस्य—ताक्ष्र्य अर्थात् कश्यप की; विनता—विनता; कद्रूः—कद्रू; पतङ्गी—पतंगी; यामिनी—यामिनी; इति—इस प्रकार; च—तथा; पतङ्गी—पतंगी ने; असूत—जन्म दिया; पतगान्—विभिन्न प्रकार के पक्षी; यामिनी—यामिनी ने; शलभान्—टिड्डियों को (जन्म दिया); अथ—तत्पश्चात्; सुपर्णा—विनता नामक पत्नी ने; असूत—जन्म दिया; गरुडम्—विख्यात पक्षिराज गरुड़ को; साक्षात्—प्रत्यक्ष; यज्ञेश-वाहनम्—भगवान् विष्णु का वाहन; सूर्य-सूतम्—सूर्यदेव का सारथी; अनूरुम्—अनुरु; च—तथा; कद्रूः—कद्रू ने; नागान्—सर्पों को; अनेकशः—अनेक प्रकार के।

कश्यप अर्थात् ताक्ष्र्य की चार पत्नियाँ थीं—विनता (सुपर्णा), कद्रू, पतंगी तथा यामिनी। पतंगी ने नाना प्रकार के पक्षियों को जन्म दिया और यामिनी ने टिड्डियों को। विनता (सुपर्णा) ने भगवान् विष्णु के वाहन गरुड़ तथा सूर्यदेव के सारथी अनूरु अथवा अरुण को जन्म दिया। कद्रू के गर्भ से अनेक प्रकार के नाग उत्पन्न हुए।

कृत्तिकादीनि नक्षत्राणीन्दोः पत्न्यस्तु भारत ।
दक्षशापात्सोऽनपत्यस्तासु यक्ष्मग्रहार्दितः ॥ २३ ॥

शब्दार्थ

कृत्तिका-आदीनि—कृत्तिका इत्यादि; नक्षत्राणि—नक्षत्रगण; इन्दोः—चन्द्रदेव की; पत्न्यः—पत्नियाँ; तु—लेकिन; भारत—हे महाराज परीक्षित, भारत के वंशधर; दक्ष-शापात्—दक्ष के शाप से; सः—चन्द्रदेव; अनपत्यः—सन्तानरहित; तासु—अनेक पत्नियों में; यक्ष्म-ग्रह-अर्दितः—क्षय रोग से पीड़ित।

हे भारतश्रेष्ठ महाराज परीक्षित! कृत्तिका नामक राशियाँ चन्द्रदेव की पत्नियाँ थीं। चूँकि प्रजापति दक्ष ने चन्द्रदेव को शाप दिया था कि उसे क्षय रोग हो जाये, अतः किसी भी पत्नी से कोई सन्तान नहीं हुई।

तात्पर्य : चूँकि चन्द्रदेव रोहिणी पर विशेष अनुरक्त था, अतः वह अन्य पत्नियों की उपेक्षा करने लगा। अतः अपनी कन्याओं के इस शोक को देखकर प्रजापति दक्ष अत्यन्त क्रुद्ध हुए और उसे शाप दे दिया।

पुनः प्रसाद्य तं सोमः कला लेभे क्षये दिताः ।
शृणु नामानि लोकानां मातृणां शङ्कराणि च ॥ २४ ॥
अथ कश्यपपत्नीनां यत्प्रसूतमिदं जगत् ।
अदितिर्दितिर्दनुः काष्ठा अरिष्टा सुरसा इला ॥ २५ ॥
मुनिः क्रोधवशा ताम्रा सुरभिः सरमा तिमिः ।
तिमेर्यादोगणा आसन्श्वापदाः सरमासुताः ॥ २६ ॥

शब्दार्थ

पुनः—फिर; प्रसाद्य—प्रसन्न करके; तम्—उसको (प्रजापति दक्ष को); सोमः—चन्द्रदेव; कलाः—प्रकाश के अंश; लेभे—प्राप्त किया; क्षये—क्रमिक ह्रास में (कृष्ण पक्ष); दिताः—हटा दिया; शृणु—सुनो; नामानि—सभी नामों; लोकानाम्—लोकों के; मातृणाम्—माताओं के; शङ्कराणि—मंगलकारी; च—तथा; अथ—अब; कश्यप-पत्नीनाम्—कश्यप की पत्नियों के; यत्-प्रसूतम्—जिनसे उत्पन्न; इदम्—यह; जगत्—सारा ब्रह्माण्ड; अदितिः—अदिति; दितिः—दिति; दनुः—दनु; काष्ठा—काष्ठा; अरिष्टा—अरिष्टा; सुरसा—सुरसा; इला—इला; मुनिः—मुनि; क्रोधवशा—क्रोधवशा; ताम्रा—ताम्रा; सुरभिः—सुरभि; सरमा—सरमा; तिमिः—तिमि; तिमेः—तिमि से; यादः-गणाः—जलचर; आसन्—प्रकट हुए; श्वापदाः—सिंह तथा बाघ जैसे हिंसक पशु; सरमा-सुताः—सरमा के पुत्र।

तत्पश्चात् चन्द्रदेव ने प्रजापति को विनीत वचनों के द्वारा प्रसन्न करके रुग्णावस्था में क्षीण हुए प्रकाश को फिर से प्राप्त कर लिया, किन्तु तो भी उनके कोई सन्तान नहीं हुई। चन्द्रमा कृष्णपक्ष में अपना प्रकाश खो देता है, किन्तु शुक्ल पक्ष में उसे पुनः प्राप्त कर लेता

है। हे राजा परीक्षित! अब मुझसे कश्यप की पत्नियों के नाम सुनो, जिनके गर्भ से इस समस्त ब्रह्माण्ड के प्राणी उत्पन्न हुए हैं। वे लगभग समस्त ब्रह्माण्ड के सचराचर की माताएँ हैं और उनके नामों को सुनना शुभ है। उनके नाम हैं—अदिति, दिति, दनु, काष्ठा, अरिष्टा, सुरसा, इला, मुनि, क्रोधवशा, ताम्रा, सुरभि, सरमा तथा तिमि। तिमि के गर्भ से समस्त जलचर उत्पन्न हुए और सरमा से सिंह तथा बाघ जैसे क्रूर पशु उत्पन्न हुए।

सुरभेर्महिषा गावो ये चान्ये द्विशफा नृप ।
ताम्राया: श्येनगृध्राद्या मुनेरप्सरसां गणा: ॥ २७॥

शब्दार्थ

सुरभे:—सुरभि के गर्भ से; महिषा:—भैंस; गाव:—गाएँ; ये—जो; च—तथा; अन्ये—अन्य; द्वि-शफा:—फटे खुरों वाले, खुरदार; नृप—हे राजा; ताम्राया:—ताम्रा से; श्येन—बाज, चील्ह; गृध्र-आद्या:—गीध इत्यादि; मुने:—मुनि से; अप्सरसाम्—अप्सराओं के; गणा:—समूह।

हे राजा परीक्षित! सुरभि के गर्भ से भैंस, गाय तथा अन्य फटे खुरों वाले पशु उत्पन्न हुए, जब कि ताम्रा के गर्भ से बाज, गीध तथा अन्य बड़े शिकारी पक्षियों ने जन्म लिया। मुनि से अप्सराएँ उत्पन्न हुईं।

दन्दशूकादय: सर्पा राजन्क्रोधवशात्मजा: ।
इलाया भूरुहा: सर्वे यातुधानाश्च सौरसा: ॥ २८॥

शब्दार्थ

दन्दशूक-आदय:—दंदशूक तथा अन्य सर्प; सर्पा:—रेंगने वाले प्राणी; राजन्—हे राजन्; क्रोधवशा-आत्म-जा:—क्रोधवशा से उत्पन्न; इलाया:—इला के गर्भ से; भूरुहा:—लताएँ तथा वृक्ष; सर्वे—समस्त; यातुधाना:—मानवभक्षी, राक्षस; च—भी; सौरसा:—सुरसा के गर्भ से।

क्रोधवशा से दंदशूक नामक सर्प, रेंगने वाले अन्य प्राणी तथा मच्छर उत्पन्न हुए। इला के गर्भ से समस्त लताएँ तथा वृक्ष उत्पन्न हुए। सुरसा के गर्भ से राक्षसों ने जन्म लिया।

अरिष्टायास्तु गन्धर्वा: काष्ठाया द्विशफेतरा: ।
सुता दनोरेकषष्टिस्तेषां प्राधानिकाञ्शृणु ॥ २९॥

द्विमूर्धा शम्बरोऽरिष्टो हयग्रीवो विभावसुः ।
अयोमुखः शङ्कुशिराः स्वर्भानुः कपिलोऽरुणः ॥ ३० ॥
पुलोमा वृषपर्वा च एकचक्रोऽनुतापनः ।
धूम्रकेशो विरूपाक्षो विप्रचित्तिश्च दुर्जयः ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ

अरिष्टायाः—अरिष्टा के गर्भ से; तु—लेकिन; गन्धर्वाः—सारे गन्धर्व; काष्ठायाः—काष्ठा से; द्वि-शफ-इतराः—दो खुरों वाले पशुओं से इतर पशु यथा घोड़े इत्यादि, जिनके खुर विभाजित नहीं हैं; सुताः—पुत्र; दनोः—दनु के गर्भ से; एक-षष्टिः—इकसठ; तेषाम्—उनके; प्राधानिकान्—प्रमुख प्रमुख; शृणु—सुनो; द्विमूर्धा—द्विमूर्धा; शम्बरः—शम्बर; अरिष्टः—अरिष्ट; हयग्रीवः—हयग्रीव; विभावसुः—विभावसु; अयोमुखः—अयोमुख; शङ्कुशिराः—शंकुशिरा; स्वर्भानुः—स्वर्भानु; कपिलः—कपिल; अरुणः—अरुण; पुलोमा—पुलोमा; वृषपर्वा—वृषपर्वा; च—भी; एकचक्रः—एकचक्र; अनुतापनः—अनुतापन; धूम्रकेशः—धूम्रकेश; विरूपाक्षः—विरूपाक्ष; विप्रचित्तिः—विप्रचित्ति; च—तथा; दुर्जयः—दुर्जय।

अरिष्टा के गर्भ गन्धर्व उत्पन्न हुए और काष्ठा से घोड़े इत्यादि एक खुर वाले पशु। हे राजन्! दनु के इकसठ पुत्र उत्पन्न हुए जिनमें से अठारह प्रमुख हैं। इनके नाम इस प्रकार हैं—द्विमूर्धा, शम्बर, अरिष्ट, हयग्रीव, विभावसु, अयोमुख, शंकुशिरा, स्वर्भानु, कपिल, अरुण, पुलोमा, वृषपर्वा, एकचक्र, अनुतापन, धूम्रकेश, विरूपाक्ष, विप्रचित्ति तथा दुर्जय।

स्वर्भानोः सुप्रभां कन्यामुवाह नमुचिः किल ।
वृषपर्वणस्तु शर्मिष्ठां ययातिर्नाहुषो बली ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ

स्वर्भानोः—स्वर्भानु की; सुप्रभाम्—सुप्रभा; कन्याम्—कन्या, पुत्री; उवाह—ब्याह किया; नमुचिः—नमुचि ने; किल—निस्सन्देह; वृषपर्वणः—वृषपर्व का; तु—लेकिन; शर्मिष्ठाम्—शर्मिष्ठा; ययातिः—राजा ययाति; नाहुषः—नहुष का पुत्र; बली—अत्यन्त बलवान्।

स्वर्भानु की कन्या सुप्रभा से नमुचि ने विवाह किया। वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा नहुष के पुत्र महाबली राजा ययाति को दी गई।

वैश्वानरसुता याश्च चतस्रश्चारुदर्शनाः ।
उपदानवी हयशिरा पुलोमा कालका तथा ॥ ३३ ॥
उपदानवीं हिरण्याक्षः क्रतुर्हयशिरां नृप ।
पुलोमां कालकां च द्वे वैश्वानरसुते तु कः ॥ ३४ ॥
उपयेमेऽथ भगवान्कश्यपो ब्रह्मचोदितः ।

पौलोमाः कालकेयाश्च दानवा युद्धशालिनः ॥ ३५ ॥
तयोः षष्टिसहस्राणि यज्ञघ्नांस्ते पितुः पिता ।
जघान स्वर्गतो राजन्नेक इन्द्रप्रियङ्करः ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ

वैश्वानर-सुताः—वैश्वानर की पुत्रियाँ; याः—जो; च—तथा; चतस्रः—चार; चारु-दर्शनाः—अत्यन्त सुन्दरी; उपदानवी—उपदानवी; हयशिरा—हयशिरा; पुलोमा—पुलोमा; कालका—कालका; तथा—और; उपदानवीम्—उपदानवीसे; हिरण्याक्षः—असुर हिरण्याक्षने; क्रतुः—क्रतु ने; हयशिराम्—हयशिरा ने; नृप—हे राजन्; पुलोमाम् कालकाम् च—पुलोमा तथा कालका ने; द्वे—दोनों; वैश्वानर-सुते—वैश्वानर की कन्याएँ; तु—लेकिन; कः—प्रजापति ने; उपयेमे—ब्याह किया; अथ—तब; भगवान्—परम शक्तिमान; कश्यपः—कश्यप मुनि; ब्रह्म-चोदितः—ब्रह्मा के अनुनय-विनय से; पौलोमाः कालकेयाः च—पौलोम तथा कालकेय नामक; दानवाः—दानव; युद्ध-शालिनः—युद्धप्रिय, योद्धा; तयोः—उनमें से; षष्टि-सहस्राणि—साठ हजार; यज्ञ-घ्नान्—यज्ञ को विध्वंस करने वाले; ते—तुम्हारे; पितुः—पिता का; पिता—पिता; जघान—मार डाला; स्वः-गतः—स्वर्गलोक में; राजन्—हे राजन्; एकः—अकेले; इन्द्र-प्रियम्-करः—राजा इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए।

दनु के पुत्र वैश्वानर के चार सुन्दर कन्याएँ थीं जिनके नाम थे—उपदानवी, हयशिरा, पुलोमा तथा कालका। इनमें से उपदानवी के साथ हिरण्याक्ष का तथा हयशिरा के साथ क्रतु का विवाह हुआ। तत्पश्चात् श्रीब्रह्मा के अनुनय-विनय पर प्रजापति कश्यप ने वैश्वानर की अन्य दो कन्याओं, पुलोमा तथा कालका के साथ विवाह कर लिया। कश्यप की इन दोनों पत्नियों के गर्भ से साठ हजार पुत्र हुए जो पौलोम तथा कालकेय के नाम से विख्यात हुए, जिनमें से निवातकवच प्रमुख था। वे सब अत्यन्त वीर तथा युद्ध कुशल थे और उनका लक्ष्य मुनियों के द्वारा सम्पन्न यज्ञों में विघ्न डालना था। हे राजन्! जब तुम्हारे पितामह अर्जुन स्वर्ग लोक गये तो उन्होंने अकेले ही इन असुरों का वध किया था जिससे राजा इन्द्र उनका परम प्रिय बन गया।

विप्रचित्तिः सिंहिकायां शतं चैकमजीजनत् ।
राहुज्येष्ठं केतुशतं ग्रहत्वं य उपागताः ॥ ३७ ॥

शब्दार्थ

विप्रचित्तिः—विप्रचित्तिने; सिंहिकायाम्—अपनी पत्नी सिंहिका के गर्भ से; शतम्—एक सौ; च—तथा; एकम्—एक; अजीजनत्—जन्म दिया; राहु-ज्येष्ठम्—जिनमें से राहु सबसे बड़ा है; केतु-शतम्—एक सौ केतु; ग्रहत्वम्—ग्रह होने का; ये—सबके सब; उपागताः—प्राप्त किया।

विप्रचित्ति को अपनी पत्नी सिंहिका से एक सौ एक पुत्र प्राप्त हुए जिनमें राहु सबसे

ज्येष्ठ था और अन्य एक सौ केतु थे। इन सबों को प्रभावशाली ग्रहों (लोकों) में स्थान प्राप्त हुआ।

अथातः श्रूयतां वंशो योऽदितेरनुपूर्वशः ।
यत्र नारायणो देवः स्वांशेनावातरद्विभुः ॥ ३८ ॥
विवस्वानर्यमा पूषा त्वष्टाथ सविता भगः ।
धाता विधाता वरुणो मित्रः शत्रु उरुक्रमः ॥ ३९ ॥

शब्दार्थ

अथ—तत्पश्चात्; अतः—अब; श्रूयताम्—सुनो; वंशः—वंश; यः—जो; अदितेः—अदिति से; अनुपूर्वशः—तिथिवार क्रम में; यत्र—जिसमें; नारायणः—भगवान्; देवः—ईश्वर; स्व-अंशेन—अपने अंश से; अवातरत्—अवतार लिया; विभुः—परमेश्वर; विवस्वान्—विवस्वान्; अर्यमा—अर्यमा; पूषा—पूषा; त्वष्टा—त्वष्टा; अथ—तत्पश्चात्; सविता—सविता; भगः—भग; धाता—धाता; विधाता—विधाता; वरुणः—वरुण; मित्रः—मित्र; शत्रुः—शत्रु; उरुक्रमः—उरुक्रम।

अब सुनो, मैं अदिति की वंश-परम्परा का तिथि-क्रमानुसार वर्णन कर रहा हूँ। इस वंश में पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् नारायण ने स्वांश रूप में अवतार लिया। अदिति के पुत्रों के नाम इस प्रकार हैं—विवस्वान्, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता, विधाता, वरुण, मित्र, शत्रु तथा उरुक्रम।

विवस्वतः श्राद्धदेवं संज्ञासूयत वै मनुम्
मिथुनं च महाभागा यमं देवं यमीं तथा ।
सैव भूत्वाथ वडवा नासत्यौ सुषुवे भुवि ॥ ४० ॥

शब्दार्थ

विवस्वतः—सूर्यदेव की; श्राद्धदेवम्—श्राद्धदेव नामक; संज्ञा—संज्ञा ने; असूयत—जन्म दिया; वै—निस्सन्देह; मनुम्—मनु को; मिथुनम्—युगल; च—तथा; महा-भागा—परमभाग्यवती संज्ञा; यमम्—यमराज को; देवम्—देवता; यमीम्—उनकी बहन यमी को; तथा—और; सा—वह; एव—भी; भूत्वा—होकर; अथ—तब; वडवा—घोड़ी; नासत्यौ—अश्विनी कुमारों को; सुषुवे—जन्म दिया; भुवि—पृथ्वी पर।

सूर्यदेव विवस्वान् की भाग्यवती पत्नी संज्ञा से श्राद्धदेव मनु तथा यमराज और यमुना नदी (यमी) का जोड़ा उत्पन्न हुआ। तब यमी ने घोड़ी का रूप धारण करके इस पृथ्वी पर विचरण करते हुए अश्विनी कुमारों को जन्म दिया।

छाया शनैश्चरं लेभे सावर्णिं च मनुं ततः ।
कन्यां च तपतीं या वै वव्रे संवरणं पतिम् ॥ ४१ ॥

शब्दार्थ

छाया—सूर्यदेव की अन्य पत्नी छाया ने; शनैश्चरम्—शनि को; लेभे—उत्पन्न किया; सावर्णिम्—सावर्णि; च—तथा; मनुम्—मनु को; ततः—उस (विवस्वान्) से; कन्याम्—एक पुत्री; च—भी; तपतीम्—तपती नाम की; या—जो; वै—निस्सन्देह; वव्रे—ब्याह किया; संवरणम्—संवरण को; पतिम्—पति।

सूर्य की अन्य पत्नी छाया से शनैश्चर तथा सावर्णि मनु नामक दो पुत्र तथा तपती नामक एक पुत्री उत्पन्न हई जिसने संवरण के साथ विवाह कर लिया।

अर्यम्णो मातृका पत्नी तयोश्चर्षणयः सुताः ।
यत्र वै मानुषी जातिर्ब्रह्मणा चोपकल्पिता ॥ ४२ ॥

शब्दार्थ

अर्यम्णः—अर्यमा की; मातृका—मातृका; पत्नी—पत्नी; तयोः—उनके संयोग से; चर्षणयः सुताः—अनेक विद्वान पुत्र; यत्र—जिनमें; वै—निस्सन्देह; मानुषी—मनुष्य की; जातिः—जाति; ब्रह्मणा—श्रीब्रह्मा के द्वारा; च—तथा; उपकल्पिता—सृष्टि की गई।

अर्यमा की पत्नी मातृका की कुक्षि से कई विद्वान पुत्र उत्पन्न हुए। श्रीब्रह्मा ने उन्हीं में से मनुष्य की जातियों की सृष्टि की जो आत्म-निरीक्षण की प्रवृत्ति से सम्पन्न हैं।

पूषानपत्यः पिष्टादो भग्नदन्तोऽभवत्पुरा ।
योऽसौ दक्षाय कुपितं जहास विवृतद्विजः ॥ ४३ ॥

शब्दार्थ

पूषा—पूषा; अनपत्यः—संतानरहित; पिष्ट-अदः—आटा खाकर निर्वाह करने वाला; भग्न-दन्तः—टूटे दाँतों वाला; अभवत्—हो गया; पुरा—प्राचीन काल में; यः—जो; असौ—वह; दक्षाय—दक्ष पर; कुपितम्—अत्यन्त क्रुद्ध; जहास—हँसा; विवृत-द्विजः—दाँत निकालकर।

पूषा के कोई सन्तान नहीं हुई। जब भगवान् शिव दक्ष पर क्रुद्ध हुए तो पूषा दाँत निकाल कर हँसा था। अतः उसके दाँत जाते रहे और तब से वह पिसा हुआ अन्न खाकर जीवन-निर्वाह करता रहा।

त्वष्टुर्दैत्यात्मजा भार्या रचना नाम कन्यका ।
सन्निवेशस्तयोर्जज्ञे विश्वरूपश्च वीर्यवान् ॥ ४४ ॥

शब्दार्थ

त्वष्टुः—त्वष्टा की; दैत्य-आत्म-जा—असुर की कन्या; भार्या—पत्नी; रचना—रचना; नाम—नाम की; कन्यका—कुमारी; सन्निवेशः—सन्निवेश; तयोः—उन दोनों के; जज्ञे—उत्पन्न हुआ; विश्वरूपः—विश्वरूप; च—तथा; वीर्यवान्—अत्यन्त बलशाली।

दैत्यों की पुत्री रचना प्रजापति त्वष्टा की पत्नी बनी। उसके गर्भ से सन्निवेश तथा विश्वरूप नामक दो अत्यन्त पराक्रमी पुत्र हुए।

तं वव्रिरे सुरगणा स्वस्त्रीयं द्विषतामपि ।
विमतेन परित्यक्ता गुरुणाङ्गिरसेन यत् ॥ ४५ ॥

शब्दार्थ

तम्—उस (विश्वरूप) को; वव्रिरे—पुरोहित के रूप में स्वीकार किया; सुर-गणाः—देवताओं ने; स्वस्त्रीयम्—पुत्री का पुत्र; द्विषताम्—शत्रु असुरों की; अपि—यद्यपि; विमतेन—अपमानित होकर; परित्यक्ताः—छोड़े हुए; गुरुणा—अपने गुरु; आङ्गिरसेन—बृहस्पति द्वारा; यत्—क्योंकि।

यद्यपि विश्वरूप देवताओं के कट्टर शत्रु असुरों की पुत्री का पुत्र था, किन्तु उन्होंने ब्रह्मा की आज्ञा से उसे अपना पुरोहित बनाना स्वीकार किया। देवताओं द्वारा अपमान किये जाने पर गुरु बृहस्पति ने इनका परित्याग कर दिया था, इसीलिए इन्हें पुरोहित की आवश्यकता पड़ी।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के छठे स्कन्ध के अन्तर्गत, ''दक्ष की कन्याओं का वंश'' नामक नामक छठे अध्याय के भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुए।